ग्यारहवां मेडल

कहानी संग्रह

राजू को माँ के आशीर्वाद सहित

कुसुम नारायणी

मनसा पब्लिकेशन्स
२/२५६ विराम खण्ड गोमती नगर लखनऊ-२२६०१०
Ph. 0522-4029598
E-mail manasapublications2007@rediffmail.com

समर्पण

अपनी बेटी गिरिजा को समर्पित

पुस्तक का नाम	ग्यारहवां मैडल
प्रकाशक	मनसा पब्लिकेशन्स २/२५६ विराम खण्ड गोमती नगर, लखनऊ - २२६०१० फोन नं. ०५२२-४०२९५१८
संस्करण	प्रथम -२००८
मूल्य	१५० रूपये मात्र
सर्वाधिकार सुरक्षित	मनसा पब्लिकेशन्स २/२५६ विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-२२६०१०

"GYARAHWHA MEDAL" STORY

BY- KUSUM NARAYANI

ग्यारहवां मैडल

विनोद जी बाहर से लौटे तो उनका चेहरा एकदम बुझा हुआ था। उन्होंने न तो पप्पू से चुटकी ली, न रेखा को चिढ़ाया वह गुमसुम से बैठे सिर पर हाथ धरे खिड़की बाहर फैले अंधेरे को निहारते रहे।

पप्पू ने रेखा से इशारे में ही पूछा, "क्या बात है, पिता जी बहुत गंभीर लग रहे हैं?" रेखा ने हाथ हिलाकर अपनी अनभिज्ञता जताई।

अब पप्पू ने उसके पास आकर धीरे से कानाफूसी की, "दीदी, पिताजी शायद कुछ सोच रहे हैं।"

अपनी गंभीरता का एहसास खुद विनोद जी को भी हुआ। उन्होंने एक विवश सी मुसकान होठों से चिपकाने की असफल कोशिश की। लेकिन क्या कभी–कभी जीवन में ऐसे अवसर नहीं आते जब अपने आप को खुश रखने की चाह होते हुए भी चाह से उस सत्य का पलड़ा कहीं भारी रहता है और मन को अवसाद से ढक देता है?

'पप्पू' भारी स्वर से पुकारे उठे विनोद जी, मगर आगे कुछ कहते कहते रुक गये। कहते भी कैसे? मक्खन सिंह ने हत्या कर दी थी, वह भी अपने सगे बहनोई की जब उन्हें ही विश्वास नहीं हो पाया था, तो 10 वर्षीय पप्पू का कोमल मन इस बात पर कैसे विश्वास कर पायेगा?

पार्टी में मिले लखनऊ के मनोहर जी ने बातों–बातों में उन्हें यह दुखद खबर दी थीं सुनकर वह स्तबध रह गये थे। उन्होंने इस का कारण जानना चाहा था, मगर एक ड्राइवर की निजी जिंदगी के बारे में कौन इतना चिंतित होता है? मनोहर जी ने बात समाप्त करते हुए कहा था, 'सब ड्राइवर शराब होते हैं ज्यादा चढ़ गई होगी, और क्या?

विनोद जी ने प्रतिवाद करना चाहा था, मगर उच्चाधिकारियों की अपनी समस्याएं क्या कम होती हैं कि मनोहर जी सिर्फ ड्राइवर के प्रसंग पर रुके रहते। वह तो मक्खन सिंह उनका पुराना ड्राइवर था इसी नाते वह सब बता

गये थे कुछ ही दिनों पहले की तो दुर्घटना थी वह।

"पिता जी, आपने मुझे बुलाया था?" पप्पू ने पास आकर पूछा

"हां...नहीं... तुम सोए नहीं अभी तक?" अचानक गये विनोद जी भला वह मक्खन सिंह को अपने आदर्श हीरो का दरजा देने वाले वीर प्रेमी बेटे से उसके किसी कुकृत्य के बारे में कहां कुछ कह सके थे, उन की आंखों में अतीत की स्मृतियों के दीए एक–एक करके जलते चले गये।

पप्पू मक्खन सिंह को देखते ही उसके हाथों में झूल जाता था, तुम मक्खन हो न, धूप में बैठोगे तो पिघल जाओगे।"

"नहीं साहब, मैं मक्खन नहीं हूं, ग्रेनाइट का टुकड़ा हूं," उसकी वाणी में स्नेह ओर वात्सल्य छलक आता था।

'ग्रेनाइट बहुत मजबूत होता है न? अच्छा तुम ग्रेनाइट हो तो अपना नाम बदल कर ग्रेनाइट सिंह कर लो।"

दोनों की मुक्त हंसी वातावरण में गूंज जाती थी।

"नहीं, बाबा यह नाम तो हमारे माता–पिता ने रखा था जैसे तुम्हारा नाम पप्पू है।"

"मेरा असल नाम तो प्रमोद है वह तो मेरा प्यार का नाम हे तुम भी अपने दो नाम रख लो। अच्छा, मक्खन सिंह, मेरी छुट्टियां हो जायें तो मैं भी पिताजी के संग कैंप में जाऊंगा फिर तुम मुझे बहुत सी कहानियां सुनाओगे न लड़ाई की?"

पप्पू की उम्र उस समय आठ बरस थी ओर वह ही उन दिनों मक्खन सिंह की बहादुरी का सबसे बड़ा प्रशंसक था, अपने साहब के घर आकर मक्खन सिंह को जितना भी समय मिलता था, उस दौरान पप्पू उससे युद्ध के कारनामे ही पूछा करता था, पप्पू के लिए उसकी हैसियत किसी जनरल से कम नहीं थी, बल्कि उससे भी बड़ी ही थी वह भी उतनी हिम्मत से गाड़ी नहीं चला सकता था।

पप्पू को गाड़ी प्रिय थी, और उससे भी अधिक प्रिय था युद्ध के कारनामे जानना बम के गिरने पर कितनी तेज आवाज हो सकती है, बोल–बोल कर इसका अंदाजा लगाना कि कौन सी गोली कितनी दूर जा सकती है।, टैंक में बैठकर कितनी घुटन होती होगी, कैसा बंदर सा लगता होगा मक्खन सिंह मौत कितनी बार उसके पास आकर डर कर लौट गई होगी, शत्रु सेना की बमबारी के बीच वह कैसे 30 दिनों से भूख से तड़पती सेना को रसद लेकर पहुंचा होगा, कहां किस बीहड़ में, उजाड़ में, जुगलों में, पहाड़ पर हरे–भरे खेतों में

और रेगिस्तान में उसने कितनी वीरता और कितनी चतुराई से जीप चलाई होगी। इसका लेखा–जोखा अब जतना पप्पू के पास था, शायद वह स्वयं मक्खन सिंह के पास भी नहीं था, वह घटनाओं और समय में भूल कर सकता था, लेकिन पप्पू नहीं।

पप्पू के लिए मक्खन सिंह शौर्य का ऐसा प्रतीक था, जिसकी वीर गाथाएं उसने कंठस्थ कर रखी थीं।

जब मक्खन सिंह उसे अपने सोने–चांदी के मेडलों के बारे में बताने लगता तो पप्पू की आंखों में वही चमक आ जाती थी, जो अपने किसी परम प्रिय के सम्मान प्राप्ति करने पर किसी की आंखों मे आ सकती है।

यद्यपि उसने कभी एक भी मेडल नहीं देखा था, किन्तु बिना देखे ही उसे हर मेडल के आकार प्रकार का पूरा–पूरा ज्ञान था– कौन सा गोल है, कौन सा तिकोन, कौन सा चौकोर है, किसका सोने का दमकता और किसका चांदी सा चमकता रंग है उन मेडलों की प्रशंसा वह अकसर अपने साथियों से, बहन भाइयों, आने–जाने वाले चाचा–चाचियों के सभी से हर्षविह्वल होकर करता रहा था।

पप्पू को आज भी याद था आजादी के बाद हुई कश्मीर की लड़ाई में मक्खन सिंह को कौन सा मेडल मिला था, इसी युद्ध में तो उसने चारों ओर से बरसती गोलियों और बमबारी की परवाह किये बिना अकेले ही जीप लेकर सेना को सामान पहुंचाया था, वह जानता था कि कौन सा मेडल उसकी कर्तव्यपरायणता पर उसे उस वक्त मिला था, जब जलती हुई जीप से भी हथियार निकाल निकाल कर उसने अपने निहत्थे हो रहे जवानों को पहुंचाये थे। घने जंगलों में से राह निकाल कर वह अपने सेनापति को बचा लाया था कब बर्फीली हिमालय की चोटी पर किसी बहादुर व चतुर गरुड़ की तरह वह चीनी टुकड़ी को देखते ही देखते अदृश्य हो गया था।

चीनी उसे खोजते ही रह गये थे, और वह अपने कर्नल को जान की बाजी लगाकर बचा लाने में सफल हो गया था।

कर्नल महेन्द्र सिंह ने अपनी कृतज्ञता जताते हुए उसे शिमला के पास ही स्थित अपना खेत और सेबों का बगीचा उपहार स्वरूप दे डाला था।

सेबों के बगीचे का किस्सा सुनकर लाल–लाल सेबों की कल्पना पप्पू को गुदगुदा गई थी। मक्खन सिंह को अपना सेबों का बगीचा कितना सुंदर लगता होगां पप्पू ने पुलक कर पूछा था, "मक्खन सिंह, मैं कभी तुम्हारा बगीचा जरूर देखूंगा दिखाओगे न।"

"बाबा साहब, बगीचा तो आपको दिखा दूंगा पर अब वह मेरा नहीं है, उसे तो मैंने कर्नल साहब की पत्नी को लौटा दिया है।"

पप्पू को क्षणिक निराशा हुई थी, लेकिन इससे मक्खन सिंह के व्यक्तित्व का एक और पहलू उजागर हुआ था वह केवल बहादुर ही नहीं था, दयालु और संवेदनशील भी था, पप्पू को सुनकर अच्छा लगा था।

कर्नल सन 1965 में भारत पाक युद्ध छिड़ जाने पर खेमकरन के मोर्चे पर दुश्मन से लोहा लेते हुए शहीद हो गये थे। मक्खन सिंह को उनकी मृत्यु का समाचार मिला तो उसने जमीन और बगीचा कर्नल साहब की विधवा पत्नी को भेंट कर दिया था।

पप्पू को मक्खन सिंह के स्तुति गान की एक और कड़ी मिल गई थी।

"मकखन सिंह जी, यह तो अच्छा है कि तुम पिता जी के पास आ गये हो, लेकिन तुम ने फौज क्यों छोड़ दी? अभी तो तुमको और मेडल मिलते तुम इतने बहादुर जो हो।"

मक्खन सिंह की आंखें अपने नन्हें साथी की प्रशंसा से चमक उठी थीं, "मैं रिटायर हो गया था, फौज में जल्दी रिटायर कर दिये जाते हैं न अब मुझे भूगर्भ विज्ञान विभाग मे जगह मिल गई है यह भी तो देश की सेवा का काम है। खूब घूमने को मिलता है कभी कभी तुम साथ होते हो तो बड़ा अच्छा लगता है।"

10 मेडल विजेता बहादुर सैनिक मक्खन सिंह को पप्पू का साथ अच्छा लगता था इससे बड़ी गर्व की बात वीर प्रेमी पप्पू के लिए और क्या हो सकती थी।

अब विनोद जी के पास दूसरा ड्राइवर था। मक्खन सिंह की बदली दूसरे विभाग में हो गई थीं पप्पू को उस नये ड्राइवर से कोई लगाव नहीं हुआ था उसे कार की ओर देखना भी छोड़ दिया था।

अमर सिंह न तो युद्ध में गया था, न ही उसे कभी कोई मेडल मिलने का प्रश्न उठता था, न तो वह मक्खन सिंह की तरह गाड़ी ही लकदक रखता था, न ही पप्पू को गोद में बैठा कर वह गाड़ी के स्टेयरिंग पर उसके हाथ रखता था, जिसे हिलाडुला कर पप्पू को गाड़ी चलाने जैसा आनंद मिलता था।

अमर सिंह तो पप्पू को अनदेखा कर देता था वह अकसर सड़क पर जाकर बीड़ी फूंकता रहता था जरूरत पड़ने पर वह किस मशीनी मानव की तरह कार की ड्राइविंग सीट पर आ जमता था छिः ऐसा नीरस आदमी भी किस काम का।

कभी–कभी मक्खन सिंह बंगले के पास से गुजरता था तो पप्पू को देखते ही उसके पास आ बैठता था फिर दोनों बहुत देर तक प्रगाढ़ मित्रों की भांति आंखों में आंखें डालकर बातचीत करते रहते थे।

जाड़े का मौसम था। स्कूल 9 बजे लगता था और बस आ जाती 8 बजे, सबेरे, 7 बजे ही विनोद जी ने देखा कि फाटे के पास ही घास पर पप्पू मक्खन सिंह के साथ बैठा गपशप में लगा है। पप्पू ने हाथों में एक पुराना सा टाफी का डब्बा था। पप्पू उस डब्बे में से कुछ निकाल कर बड़े ध्यान से देखता जा रहा था, फिर सिर उठाकर मकखन सिंह से तरह तरह के प्रश्न पूछता जा रहा था। धीरे–धीरे उसकी आंखों में मक्खन सिंह के लिए प्यार व अनुराग गहरा होता जा रहा था।

विनोद जी समझ गये थे कि निश्चित रूप से उसमे मेडल ही थे अगले दिन ही मक्खन सिंह को परियोजना स्थल पर जाना था जाने से पहले शायद वह अपने नन्हें प्रशंसक को अपनी वीरता के साक्षी दिखाने लाया था फिर विनोद जी का भी तो तबादला होने वाला था जाने दोबारा मक्खन सिंह की ? पप्पू से मुलाकात होगी भी या नहीं।

सुखी गृहस्थ जीवन, लहलहाते खेत, गांव में बना पक्का मकान, स्कूल में पढ़ते बच्चे, शहर के पास ही गांव, बच्चों को ऊंची शिक्षा दिलाने की आकांक्षा, गायें, भैंसें, सम्पन्न कृषक परिवार, मां थी, भाई थे, ब्याही हुई बहनें थीं–मक्खन सिंह की मेहनत, ईमानदार और बुद्धिकौशल के कारण उसे कोई कमी नहीं थीं गाड़ी चलाने का शौक सेना से अवकाश प्राप्त हो जाने पर भी बना रहा। नौकरी भी अच्छी मिली कर्तव्यपरायण और ईमानदारी असंदिग्ध फिर इतना जघन्य अपराध कैसे हो गया यह सब?

विनोद जी ने बड़ी असहाय निगाहों से सीखचों के पीछे खड़े लम्बे चौड़े मक्खन सिंह की लाश को देखा था नहीं, लाश नहीं उसकी आंखों के दीपों में अभी भी ज्योति थी, दपदपाती हुई घास की तरह बेतरतीब दाढ़ी मूंछें, ऐंसी संवरी हुई नहीं रूखे बिखरे केश, अभी भी अपने कोपन से उसकी बड़ी उम्र को झुठलाते हुए चेहरे पर अपराधबोध का तेज ऐसा जैसे कोई क्रांतिकारी शहादत का सम्मान पाने के लिए उतावला हो रहा हो।

सीखचों के पास आते–आते विनोद जी के मन में मक्खन सिंह के कितने ही चित्र बने मिटे– उसकी कर्तव्यपरायण्ता, मानवीयता, स्नेह सौहार्द के, विनोद जी का संवेदनशील मन द्रवित हो उठा, उन्होंने मक्खन सिंह का हाथ थामते हुए भर्राए कंठ से पूछा था, "यह क्या कर दिया तुमने, मक्खन सिंह?"

विनोद जी को देखते ही मक्खन सिंह बेचैन हो उठा, पर अपने आंसुओं को पीते हुए पपड़ियाए होठों से बलात मुसकरा दिया फिर उसने जवाब देने की जगह पूछा, "साहब हमारे बाबा साहब अच्छी तरह हैं न? कौन सी कक्षा में पहुंच गये पप्पू जी अब?"

विनोद जी आश्चर्यचकित रह गये। मक्खन सिंह के चारों ओर मृत्यु की कालिमा बढ़ती जा रही थी पर उस प्राणघातक अंधेरे में भी, बेड़ियों में जकड़े उस कैदी को अपने नन्हें प्रशंसक की याद आ रही थी से अपनी मौत का जरा भी डर नहीं था। उसकी आंखों में ता अब भी प्यार का उजाला था। विनोद जी ने बड़ी मुश्किल से अपना प्रश्न दोहराया, 'तुमने ऐसा क्यों किया? क्या यह सच है?"

विनोद जी को अब भी विश्वास नहीं हो रहा था कि मक्खन सिंह ने अपने ही बहनोई की हत्या कर दी थी उनके लिए उसका हत्यारा वाला रूप सरासर अविश्वसनीय था।

"यह सच है", मकखन सिंह ने कुछ क्षणों की चुप्पी के उपरांत जवाब दिया उसकी दृष्टि कहीं दूर जाने क्या खोज रही थी। "बहन को मैंने बड़े लाड़–प्यार से पाला पोसा था बयाहा भी था मगर आदमी पहचानने में भूल कर दी थी।"

वह फिर चुप हो गया था, जेसे कुछ याद कर रहा हो कोई चीज बहुत धुंध के पीछे छिपी हो, ओर वह उसे पहचानने की कोशिश कर रहा हो। उसने खोए–खोए स्वर में फिर से पूछा,"नन्नू जी ठीक हैं न, साहब?"

"हां, विनोद जी के कहते कहते उनकी कल्पना में पप्पू को मेडिल दिखाते हुए मक्खन सिंह का दृश्य उभर आया, पूरे 10 मेडल चांदी के उनकी आतुरता बढ़ गई, फिर?

फिर? साहब वह मेरा बहनोई लंबा तगड़ा, खूबसूरत और बड़ा ही सजीला जवान था एकदम ही चुस्त दुरुस्त जो देखता उसकी आंखें चुधियां जाती थीं, ट्रक चलाता था मुझसे अक्सर कहा करता था, कमली के पैर ऐसे शुभ पड़े कि घर में कोई कमी नहीं रही सुनकर मेरी छाती चौड़ी हो जाती थी, लेकिन मेरी खुशी को नजर लग गई थी, साहब मेरी बहन के पैर शुभ हुए कि नहीं, लेकिन उस दिन का दृश्य देखकर मेरा मन रो दिया था।

"कमली और बच्चे सभी मायके आये हुए थे। मैं भी सात–आठ दिन बाद ड्यूटी पर से छुट्टी लेकर घर पहुंच गया था उसको देखकर खुश हो गया था अपने कमरे में पहुंचा तो हैरान रह गया, वहां मेज पर मुर्ग तंदूरी और महंगी विदेशी शराब की बोतलें रखी थीं। मेरे बहनोई अच्छर सिंह के साथ उसके

कुछ साथी भी जमे थे। पता नहीं क्यों मेरा माथा ठनका पसीने की कमाई विदेशी महंगी शराब पर वही गंवाता है, जिसका घर से काई सरोकार न हो जिसे घर से प्यार होता है, वह तो घर में ऐसी चीज लाता ही नहीं फिर उन चीजों को खरीदने के लिए तो हराम की कमाई चाहिए।

"मैं कमी की भाभी से पूछ ही रहा था कि ये सब चीजें कौन लाया है, तभी मेरी बहन सफाई देती हुई बीच में बोल पड़ी, "अक्सर ले आते हैं वे बस खाने पीने के शौकीन जो ठहरे रोटी सब्जी पर गुजर करने वाले नहीं हैं यह।"

"तभी मेरे बहनोई ने मुझे कमरे में बुलाया मेरा चेहरा देखकर उससे मेरी चिंता या मेरा गुस्सा छिपा नहीं रह सका था। मुझसे कुछ कहने से पहले उसने अपने साथियों की ओर देखा, इशारे से उन्हें समझा दिया कि वे चुप रहें"

"साहब", मक्खन सिंह का कृषकाय सीना तन गयाथ ा, आंखे लाल हो उठी थीं, बोला "मैं संत नहीं हूं। महात्मा नहीं हूं लेकिन बेईमान और गद्दार भी नहीं हूं मैं सिपाही हूं, जिसने देश व सच्चाई की रक्षा की कसम खाई है।"

मैं राज जान गया था, मेरा बहनोई तस्करी और जासूसी के धंधे में लगा हुआ था, पड़ोसी देश से आ रहा था उसके पास वह सब धन।

"उससे कहासुनी हुई समझाना चाहा लेकिन अच्छर सिंह के सिर खून चढ़ा हुआ था। शराब भी चढ़ी हुई थी वह पिस्तौल निकाल कर मेरी ओर झपटा पिस्तौल पकड़ लिया सोचा, अगर मैं भी मारा जाऊंगा तो भी खूनी वही कहलायेगा। पकड़ा जायेगा तो मेरी बहन का सुहाग मिट जायेगा।

"लेकिन छीनाझपटी में मेरे हाथ से पिस्तौल चल गई, गोली उसे लग गई सबसे पहले मेरी बहन ने ही पुलिस को गवाही दी कि मैंने चिढ़कर उसे मारा था, मैंने भी मान लिया। यह सच भी है कि वह मरा मेरे ही हाथों से था।"

विनोद जी डबडबाई आंखों से उसे देखते रहे थे फिर उनका सिर झुक गया सच्चाई जानकर, जाने कहां से सन्नाटा घिर आया था, उनके बाहर भी, भीतर भी

"साहब, पप्पूजी को बोलना मुझे एक और मेडल मिला है" उस सन्नाटे को चीरती मक्खन सिंह की थरथराती आवाज उभरी।

विनोद जी ने चौंक कर सिर उठाया उन्होंने देखा कि मक्खन सिंह ने अभिवादन के अंदाज में अपने हाथ ऊपर उठा दिये थे, उसके दोनों हाथों में पहना हथकड़ियों का जोड़ा झनझना उठा था, सोने चांदी का नहीं, लोहे का ग्यारहवां मेडल।

•••